समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 2019–20 पृष्ठः– 4 अंक :– 48 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

विभाजन का उत्तर है – अखण्ड भारत – डॉ. किशन कछवाहा

सन् 1947 में आजादी तो मिली लेकिन भारत ने दुनिया का सबसे बड़ा विस्थापन झेला। भारत–पाकिस्तान विभाजन अर्थात् मुस्लिमों के लिये एक अलग देश बनाने के लिये हुये मतदान में भारत के 98प्रतिशत मुसलमानों ने अपने वोट दिये थे। मुस्लिम लीग को सबसे अधिक मत बंगाल, असम, मुम्बई और उत्तरप्रदेश से मिले थे। लेकिन विभाजन की मांग करने वाले और पाकिस्तान का निर्माण करने के पक्ष में मत देने वाले इसी देश में रह गये। जब इसी देश में रहना था तो विभाजन के लिये मत क्यों दिया। जो पाकिस्तान गये उनमें पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, गुजरात और मुम्बई से 72,26,600 थे।

इस भारत विभाजन की त्रासदी में 20 लाख लोग मारे गये थे। 1.5 करोड़ लोग विस्थापित हुये थे। 12.5 लाख शरणार्थी भारत आये थे। एक लाख महिलाओं का बलात्कार हुआ था। दो करोड़ लोगों को अपने पुरखों की भूमि छोड़ना पड़ी थी।

द पाकिस्तान नेशनल लिबरेशन मूवमेन्ट के संस्थापक अध्यक्ष रहमत अली ने सन् 1935 में, केम्ब्रिज में 'पाकिस्तान–द फादर लैण्ड ऑफ द पाक नेशन' पुस्तक लिखी थी। उसने इस पुस्तक में गर्वपूर्वक डींग मारते हुये लिखा था कि पाकिस्तान 712 ई. में ही अस्तित्व में आ गया था जब मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर विजय प्राप्त की थी। इसी बात को मुहम्मद जिन्ना ने सन् 1944 को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मुस्लिम छात्रों को सम्बोधित करते हुये कही थी। इससे कट्टर मुस्लिम नेताओं की दुर्भावना पूर्ण मानसिकता को समझा जा सकता है।

सन् 1947 से अब तक इस पूर्व और चालाक मानसिकता को समझा जा सकता है, जो संख्या की कमी की स्थिति में लोकतंत्र के सभी फायदे और सुविधायें चाहती हैं, और संख्या बहुलता की स्थिति में मजहब–तंत्र यह उस मध्य युगीन विचारधारा को भी नहीं छोड़ना चाहती, जिसके माध्यम से पूरी दुनिया में हरे परचम के माध्यम से इस्लाम के नीचे लाने षाड़यांत्रिक योजना है। प्रेम, शास्ति और भाईचारे का उपदेश देने वाले इस्लामी विद्वान, उन प्रशिक्षण शिविरों और मदरसों की बात सामने आने पर चुप्पी साध लेते हैं, जहां जिहादी तैयार होते हैं। वे आतंकी गतिविधियों का खुलकर विरोध करने से क्यों कतरा जाते हैं? इसी चुप्पी और कट्टरपंथी कारनामों के कारण पूरी दुनिया में इस्लाम और मुसलमान शक के दायरे में आ गया है।

सन् 1921 केरल में हुये मोपला मुसलमानों द्वारा किये गये दंगे जिनके बारे में डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक ''थॉट आन पाकिस्तान में लिखा है'' मलावार में मोपलाओं ने हिन्दुओं पर खून खौला देने वाले ऐसे अत्याचार किये जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। मोपलाओं ने जो कुछ किया उसे हल्के ढंग से लिया गया।''

विभाजन और आजादी के बाद भी मुसलमानों और मजहबी कट्टरता से मुक्त करने की दिशा में कांग्रेस ने कोई प्रयास नहीं किया। तुष्टीकरण की नीति चलती रही। कट्टर इस्लामिक नेताओं को गले लगाने की नीति पर कांग्रेस तब से आज तक चलती चली आ रही है। मुस्लिम वोट बैंक की होड़ में आज कांग्रेस सहित अनेक दल देशहित के खिलाफ हद से बाहर जाकर समझौता करते हैं।

जिहाद राजनीतिक युद्ध है। जिहादियों की अपनी घोषणाओं, नारों, दस्तावेजों में, उन्हें प्रेरित करने वाली किताबों में हर जगह मोटे–मोटे अक्षरों में लिखा है कि उनका उद्देश्य काफिरों के विरूद्ध मजहबी युद्ध चलाना है। 'जब तक दुनिया की सारी धरती अल्लाह की न हो जाय। जब तक 'निजामे–मुस्तफा पूरी दुनिया में' कायम न हो जाय। इसकी प्रेरणा, बल्कि आदेश उन्हें खुद 'प्रोफेट मुहम्मद ने स्थायी रूप से दे रखा है। इसकी पुष्टि बड़ी सरलता से सम्पूर्ण इस्लामी इतिहास और मूल किताबों से होती है। 'कुरान अल्लाह के शब्द हैं, जो इस पर संदेह करे, उसे मौत के घाट उतारो, मूर्तिपूजक और देवी–देवताओं को मानने वाले लोग सबसे गंदे, घृणित होते हैं, सारी दुनिया को इस्लाम के झंडे तले लाना है, मगर किसी के द्वारा इस्लाम छोड़ने की सजा मौत है, जिहाद लड़ना मुसलमानों का सबसे पवित्र कर्तव्य है।

सातवीं सदी में भी तलवार, छल, दमन, युद्ध से काम निकाला गया था। आज भी तलवार और धमकी ही हर बात का उत्तर होती है।

1940–41 में मुसलमानों को देशभर में पाकिस्तान दिवस के नाम पर हिन्दुओं पर सुनियोजित हमले करने के गुप्त निर्देश जारी किये गये। परिणाम स्वरूप 1941 के प्रारम्भिक महीनों में मुम्बई, अहमदाबाद से लेकर ढ़ाका तक निर्दोष हिन्दुओं का रक्त बहाया गया। यही प्रश्न खड़ा हुआ कि क्या कांग्रेस की अहिंसा मुस्लिम हिंसा का मुकाबला करने में समर्थ है? आज आजादी के 70 साल बाद भी इस वोट बैंक की राजनीति ने राष्ट्रीयता की उस डोर को पूरी तरह तार–तार कर दिया है। सन् 1941 की तुलना में आज का परिदृश्य और अधिक नैराश्यपूर्ण और भटकाने वाला है।

16 अगस्त,1946 ''सीधी कार्रवाई'' 'डायरेक्ट एक्शन' के द्वारा बर्बरतापूर्वक कत्ले आम हुआ। पूरा इतिहास मुस्लिम हमलावरों के कुकर्मों से भरा पड़ा है, जिसमें बलात धर्म परिवर्तन, सामूहिक नरसंहार, हजारों मंदिरों का विध्वंश, उनसे मस्जिदों का निर्माण, जजिया लूट को भूल पाना कठिन है। 'थॉट आन पाकिस्तान' में ये शब्द लिखे हुये हैं।

मुस्लिम राजनीति अनिवार्यतः मजहबी है और वह हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच फर्क को ही मानती है। इसके अप्रतिरिक्त बाबा साहब की विचारधारा के दृश्य आंख खोल देने वाले हैं। मुसलमान जब अल्पसंख्यक होते हैं, तब वे मासूम होने का दिखावा करते हैं, लेकिन जब वे बहुसंख्यक हो जाते हैं तब वे गैर मुसलमानों को मौत के घाट उतार देते हैं। यह है उनका असली चेहरा। एक ओर औवेसी बंधुओं जैसे मुसलमान बार–बार जहर उगलने वाले भाषणों के जरिये उन्माद फैलाने की कोशिश करते हैं, वह भी अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर, वहीं दूसरी और कतिपय मीडिया संस्थानों द्वारा आतंकवादी याकूब मेमन अफजल गुरू जैसों को मुस्लिम होने के कारण फाँसी दिये जाने का आरोप लगाया जाना।

हिन्दू–मुस्लिम एकता के भ्रम यदि देश के बंटवारे के साथ भी दूर जाते तो शायद बेहतर होता। लेकिन मुसलमानों के दबाव बनाने की शुरूआत यहीं से हुयी और यह आज तक बढ़ती ही चली जा रही है। दुनिया भर में सेकुलरों, वामपंथियों और तथा कथित बुद्धिजीवियों ने जो उग्रवादी इस्लाम की झूठी अवधारणायें बनाई हैं, वह महज धोखा और भ्रम है। उदारवादी इस्लाम एक अजीब किस्म का मजहब है, उस पर भरोसा करने के लिये गत 14सौ

शेष भाग पृष्ठ क्र.4 पर

हिन्दू राष्ट्र को श्रेष्ठ और विजयशाली बनायेंगे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर 'श्रीगुरूजी' के संस्मरण सभी स्वयंसेवकों के लिए प्रेरणादायी एवं उनके त्यागमय जीवन का प्रतिरूप हैं। पाठकों के लिए ऐसे ही दो प्रेरक–प्रसंग यहां दिये जा रहे हैं:–

विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के छात्रों में अनुशासन भाव का निर्माण करने की दृष्टि से सरकार ने नेशनल डिसिप्लिन स्कीम (राष्ट्रीय अनुशासन योजना) बनायी। इस योजना का कार्य–भार आजाद हिन्द फौज में कार्य कर चुके एक देश भक्त को सौंपा गया। उन्होंने इस कार्य के लिए देशभर का दौरा कर योजना को प्रारम्भ किया।

एक बार मैं दिल्ली गया। 'राष्ट्रीय अनुशासन योजना' के प्रमुख मुझसे मिलने के लिए आने वाले थे, पर किसी व्यस्तता के कारण वे नहीं आ पाये तो उनके स्थान पर उनके सहयोगी मुझसे मिलने आये। इन महोदय ने मुझसे कहा–सुना है कि आपके संघकार्य में अनुशासन बहुत है।

मैंने कहा–हाँ, मैंने भी ऐसा ही सुना है। उन महोदय ने पुनः प्रश्न किया–आप यह अनुशासन कैसे उत्पन्न करते हैं?

मैं उन्हीं से पूछने लगा–क्यों, आप नहीं करते हैं क्या? महोदय ने बताया–हम प्रयत्न तो बहुत करते हैं, पर अपेक्षित सफलता के दर्शन नहीं होते। सारे छात्र बड़ी अच्छी तरह से कार्यक्रम कर लेते हैं परन्तु कार्यक्रम से छुट्टी मिलते ही वे उद्दण्डता पर उतर आते हैं, ऐसा लगता है कि अनुशासन उत्पन्न करने के स्थान पर हम उद्दण्डता ही ला रहे हैं।

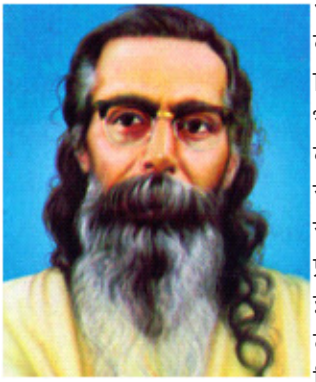

मैंने उनसे निवेदन किया–अनुशासन लाने के लिए सामान्यतः दो उपायों को काम में लाया जाता है। पहला दण्डित करना और दूसरा प्रलोभन दिखलाना। ईश्वर की कृपा से भय और प्रलोभन, ये दोनों ही बातें संघकार्य में नहीं हैं। हम किसी को डराते नहीं। डराना–धमकाना हमारा काम भी नहीं। प्रलोभन हम किसी को देते नहीं अपितु इसके उल्टे होता यह है कि संघ शाखा में आने वाले स्वयंसेवक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए स्वयं अपनी ओर से खर्चा करते हैं। इतना ही नहीं, यदि संघ का स्वयंसेवक सरकारी कर्मचारी है तो सरकार उसे नौकरी से निकाल देने की धमकी देती है। धमकी मिलने के बाद भी वे अपने पास से व्यय करते हैं संघ–कार्य के लिए। संघ में भय और प्रलोभन, दोनों ही नहीं, इसके बाद भी 'जहाँ लात मारेंगे, वहीं पानी निकालेंगे' वाली हिम्मत से काम करते हुए स्वयंसेवक यहाँ अनुशासन का पालन करते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि भय और प्रलोभन के न होते हुए भी संघ में अनुशासन रहने का कारण क्या? आप थोड़ा समझने का प्रयास करें। मनुष्य स्वयं पर कठोर–से–कठोर अनुशासन के बंधन को बहुत प्रसन्नता के साथ उस समय स्वीकार कर लेता है, जब उसको यह अनुभव होता है कि उसके द्वारा कोई महान कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। हमने स्वयंसेवकों के सामने लक्ष्य के रूप में एक सीधा और सरल सत्य रखा है कि **हमारा देश हिन्दू राष्ट्र है और हम हिन्दू राष्ट्र को जगत में श्रेष्ठ तथा विजयशाली बनायेंगे।** यह इतना भव्य तथा उदात्त लक्ष्य है कि इससे हृदय को स्वतः प्रेरणा मिलती है। इस लक्ष्य को अपने सामने रखकर हमारा स्वयंसेवक कहता है कि इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए मैं हजार प्रकार के बंधन हों, तो भी उन्हें वरण करूँगा।

उन महोदय ने मेरी बात स्वीकार करके कहा–आपका कहना पूर्णतः ठीक है। आपने जो तथ्य और लक्ष्य बतलाये हैं, मैं स्वयं उसे मानता हूँ, पर सरकारी ढाँचे में होने के कारण हम लोग बोल नहीं सकते।

मैंने उनसे कहा–भाई! जब तुम लोग सत्य बोल नहीं सकते और सत्य को छात्रों के सामने भी नहीं रख सकते तो उनमें अनुशासन लाने की आशा मत करो।

सच को छिपाता और झूठ को पंख देता मीडिया

शाहीनबाग में गोली चलाने वाले को देखते देखते 'हिन्दुआतंकवादी' घोषित कर दिया। और जब सच्चाई सामने आ गयी कि वह आप आदमी का कार्यकर्ता है, तब मानो मीडिया को साँप सूंघ गया। कल तक लोकतंत्र में हिंसा की संस्कृति और हिन्दू आतंकवाद के उभार का हौआ खड़ा कर रहे थे, वे अचानक गाढ़ी नींद में चादर ओढ़कर सो गये।

इसी प्रकार दिल्ली में मोहम्मद वसीम को हथियारों के जखीरे के साथ पकड़ा गया लेकिन इस खबर को समाचार पत्रों और चैनलों में गायब कर दिया। इसी तरह जामिया की हिंसा में जलता हुआ टायर पुलिस पर फेंकने वाले इलियास की गिरफ्तारी को भी मीडिया ने अंदर के पन्नों में लपेट लिया।

इसी प्रकार मुम्बई आजाद मैदान में एक वीडियो सामने आया जिसमें कुछ लोग शरजील इमाम के समर्थन में नारे लगा रहे थे और असम को भारत से अलग करने के उसके सपनों को पूरा करने की बात कर रहे थे। इस पर राजद्रोह का केस दर्ज हुआ लेकिन मुम्बई के अखबारों में यह समाचार भी अंदर के पृष्ठों में समा गया।

सेकुलरों की साजिश और नागरिकता कानून

सेकुलर उत्पाती कैसी कैसी साजिश रच सकते हैं इसका पता तो अब चला है, जब नागरिकता संशोधन कानून की आड़ में आगजनी, पथराव और पुलिस पर भी हमले किये गये। इस मामले को तूल देकर देश में लीगी तत्वों को भड़का कर आग लगाने वाले वे ही लोग हैं जो सेकुलरिज्म के नाम पर भारत में कुनबाई हुकूमत चलाते रहे हैं। इस कानून की आड़ लेकर ये सेकुलर नेता और कट्टरवादी तत्व मुसलमानों को भड़काकर अपनी खोई हुयी राजनीतिक जमीन को फिर से पाने की कोशिश कर रहे हैं। सरकार द्वारा बार–बार स्पष्ट किया जा चुका है कि इस कानून से किसी भी भारतीय को डरने की जरूरत नहीं है फिर भी ये शैतानी दिमाग वाले रोज कहीं न कहीं आग लगवा रहे हैं।

सी.ए.ए. में नागरिकता देने का प्रावधान है, लेने का नहीं, जो केरल, अलीगढ़ या अन्य स्थानों पर उपद्रव कर रहे हैं, वे गजवा–ए–हिंद के समर्थक हो सकते हैं, हिन्दस्थान के नहीं।

जिन सेकुलरों ने सन् 1975 में संविधान का गला घोंटा था, आज वहीं संविधान बचाने की बात कर देश में अराजकता का माहौल बना रहे हैं। नागरिकता संशोधन कानून पर हिंसक प्रदर्शन का समर्थन करने वाली काँग्रेस के लिये घुसपैठियों और शरणार्थियों में कोई अंतर ही नहीं है।

काँग्रेस के नेताओं ने सन् 1947 में देश का बंटवारा कराया और अब जे.एन.यू. के वामपंथियों के माध्यम से देश के टुकड़े–टुकड़े करने पर आमादा हैं। लेकिन देश की जनता देशद्रोहियों को पहचान चुकी है।

नागरिकता संशोधन कानून का विरोध पाकिस्तान भी कर रहा है। कांग्रेस, सपा, बसपा, सहित पूरा विपक्ष का कहना है कि कानून में मजहबी आधार पर भेदभाव किया गया है। विपक्ष और पाकिस्तान के विरोध में काफी समानतायें हैं–इस बात को सरलता से समझा जा सकता है क्यों? सिर्फ वोट बैंक की राजनीति के लिये?

औबेसियों, कांग्रेस सहित पूरा विपक्ष हिन्दुओं के प्रति नफरत और अवांछित आचरण वाले मजहबी घुसपैठियों से प्रेम–वतन और वतनपरस्ती तो नहीं हो सकती।

पुलवामा पर राहुल की क्षुद्र राजनीतिक नीयत

पुलवामा हमले की बरसी पर नियंत्रणरेखा के पार से पाकिस्तानी सेना ने हमेशा की तरह नापाक हरकत करते हुये पुँछ सेक्टर के गाँवों एवं भारतीय सेना की अग्रिम चौकियों पर मार्टार के गोले दागे और छोटे हथियारों से गोलीबारी की घटनाओं को अंजाम दिया। पाकिस्तानी फौज ने गाँवों को निशाना बनाया जिसमें ग्रामीणों की मात हो गयी।

ऐसे अवसर पर कॉंग्रेस नेता राहुल द्वारा ऐसा राजनीतिक थुथला सवाल दागा जाना कि पुलवामा हमले से सबसे ज्यादा फायदा किसे हुआ? एक तो यह प्रश्न प्राथमिक तौर पर नासमझी भरा है, माना जाना चाहिये दूसरी ओर यह प्रश्न भी उभर कर सामने आता है कि वे ऐसे प्रश्न उपस्थित कर आतंकी संगठनों लश्कर–ए–तैयबा आदि को प्रोत्साहित क्यों करना चाहते हैं? पुलवामा मात्र नृशंस आतंकी हमला था। ऐसे प्रश्न खड़े करना न केवल सरकार वरन् सुरक्षाबलों को हतोत्साहित करने जैसे हैं यह प्रयास है। ऐसे प्रयासों से शहीदों का अपमान होता है, जिन्होंने देश के लिए न केवल अपने प्राणों की आहुति दी है, वरन् अपना सब कुछ खो दिया है।

उल्लेखनीय है कि 14 फरवरी 2019 को जम्मू–कश्मीर के पुलवामा में बड़ा और नृशंसपूर्ण आतंकी हमला हुआ था जिसमें सी.आर.पी. एफ. के 40 जवान शहीद हो गये थे।

कोरोना वायरस का कहर : पाक असमर्थ – डॉ. किशन कछवाहा

चीन के कोरोना वायरस से प्रभावित हुबेई प्रान्त में फंसे पाकिस्तानी नागरिकों को वापिस लाने की जोरदार मांग उठ रही है। इस दबाव को झेल रहे पाकिस्तान ने अभी हाल ही में सिर्फ इतना कहा है कि वह चीन के हालात पर करीबी नजर रखे हुये है और अपने नागरिकों को वहाँ से निकालने के मामले में जल्द कोई निर्णय लेगा। पाकिस्तान को इस समय चौतरफा निन्दा का सामना करना पड़ रहा है। जब पाकिस्तान की ओर यह कहा गया कि बुहान (चीन) से पाकिस्तानी छात्रों को वापिस नहीं लाया जायेगा क्योंकि कोरोना वायरस से संक्रमित किसी भी मरीज के इलाज के लिये तयमानकों का देश में अभाव है। यहां बुहान में फंसे पाकिस्तानी नागरिक सोशल मीडिया पर लगातार सरकार से उन्हें वहां से निकालने का अनुरोध कर रहे हैं।

चीन में 28 हजार पाकिस्तानी छात्र हैं और इनके अलावा सैंकड़ों की संख्या में कारोबारी हैं। चीन में कोरोना वायरस लगातार खतरनाक होता जा रहा है। इससे प्रभावित लोगों की संख्या अब तक दो हजार के पार पहुंच चुकी है। इस वायरस के डर से लोग इतना डर गये हैं कि वे अपने पालतू जानवरों को भी मास्क पहना कर घुमा रहे हैं।

कोरोना वायरस से प्रभावित लोगों की संख्या अब तक 64,894 तक पहुंच गयी है।

इधर भारतीय विदेश मंत्री जयशंकर ने बतलाया कि टोक्यो स्थित भारतीय दूतावास में जहाज 'डायमन्ड प्रिंसेस' पर सवार यात्रियों एवं चालक दल को सभी तरह की सहायता पहुंचाना शुरू कर दी है। कोरोना वायरस के मद्देनजर जहाज को जापान तट पर पृथक कर रखा गया है। इस जहाज पर सवार भारतीयों ने विदेश मंत्रालय से मदद की गुहार लगायी थी। भारतीय चालक दल के दो लोगों को कोरोना वायरस के लिये जांच में लिया गया था।

करीब 300 बांग्लादेशी विशेष विमान से स्वदेश लौटे। उन्हें सेना एवं पुलिस की निगरानी में अलग बनाये गये केन्द्र में रखा गया है। कुछ पश्चिमी देशों में भी कोरोना से संक्रमित लोग पाये गये हैं। फ्रांसमें इससे प्रभावित एक व्यक्ति की मौत हो चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन पहले ही इसे वैश्विक आपदा बताकर इसके खतरे से आगाह कर चुका है।

चीन के हालातों पर कुछ भी कहना कठिन है क्योंकि जो कुछ पता चल पा रहा है, वह सिर्फ सरकारी स्त्रोंतों के माध्यम से ही सामने आ पा रहा है।

चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के अनुसार कोरोना वायरस के लक्षण 'मर्स' और 'सार्स' के वायरस से मिलते जुलते हैं। यह नया वायरस सार्स ज्यादा खतरनाक है। इसलिये वैज्ञानिकों को मानना है कि इसके खत्म होने में अधिक समय लग सकता है पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष प्रो. श्रीनाथ रेड्डी के अनुसार सन् 2019–एन.सी.ओ.पी. हवा के जरिये यह तेजी से फैल रहा है। इसका प्रकोप तीन कारकों से जुड़ा है–इसकी संक्रामकता, विषैलापन व इंसानों के बीच तेजी से फैलने की क्षमता। यह घातक रूप धारण कर सकता है। अभी इसका कोई इलाज नहीं है। बीमारी छिपाना चीन की पुरानी आदत में शामिल है। सन् 1996 में पहली बार चीन मं वर्डफ्लू भी चीन में फैला था।

वर्तमान में कोरोना वायरस के कारण चीन के 21 शहरों में कर्फ्यू जैसे हालात बने हुये हैं। सभी कारोबार ठप है। इसके कारण उसकी अर्थव्यवस्था को 136 अरब डालर की हानि उठाना पड़ सकती है।

लैकंस्टर विश्वविद्यालय के शोधकर्त्ताओं का अनुमान है कि फरवरी के प्रथम सप्ताह में ही बुहान में ही 1.9 लाख लोग इस वायरस से प्रभावित थे। कई बड़े शहरों में सड़क, वायु, समुद्र परिवहन पर चीन सरकार रोक लगा चुकी है। इससे करीब दस करोड़ लोग प्रभावित हुये हैं।

यहाँ कोई ऊँचा-नीचा नहीं

1950 के पुणे के संघ–शिक्षा वर्ग का प्रसंग है। 1300 स्वयंसेवक वर्ग में थे। भोजन के समय जलेबी भी बनाई गयी थी। श्री मोरोपंत पिंगले, श्री सीताराम पन्त, अभ्यंकर जी जैसे अन्य अधिकारी वितरण व्यवस्था का निरीक्षण कर रहे थे। श्रीगुरूजी उनके पीछे–पीछे थे, कई स्वयंसेवकों को नाम लेकर आग्रहपूर्वक उन्हें खिला रहे थे।

दूसरी पंक्ति में अधिकारी वर्ग भोजन के लिए बैठा। आठ–नौ स्वयंसेवकों को वितरण के लिए कहा गया। एक स्वयंसेवक वितरण न करके, वैसे ही बैठा रहा। श्रीगुरूजी का ध्यान उसकी ओर गया। भोजन शुरू होने के पूर्व ही वे उसके पास गये और कहा–तू कैसे बैठा है? वितरण कर।

उस स्वयंसेवक को बहुत संकोच हो रहा था। वह नारायण 'चर्मकार' था, इसलिए संकोच कर रहा था। जब उसने श्रीगुरूजी को परिचय दिया तो श्रीगुरूजी को बहुत खराब लगा। श्रीगुरूजी ने उसका हाथ पकड़ कर जलेबी की थाली उसके हाथ में दी और सर्वप्रथम अपनी थाली में परोसने को कहा, फिर सब स्वयंसेवकों को देने के लिए कहा। यह प्रसंग है छोटा, परन्तु जीवन भर याद रहेगा। एक अत्यन्त कठिन समस्या का अत्यन्त सरल उत्तर अपने आचरण से देने वाला।

–श्री गोविन्द दगड़,
बोड़के(पुणे)

97 साल की उम्र में सरपंच बनी

राजस्थान के सीकर जिले की नीमकाथा के पुराना बाँस गाँव की विद्यादेवी ने सरपंच का चुनाव सन्तान्नवे वर्ष की उम्र में जीता है।

शेष भाग पृष्ठ क्र.1 का

वर्षों का प्रमाणित दस्तावेजों वाला इतिहास को भुलाना पड़ेगा। जिहाद के नाम पर किये गये कुकृत्यों और जघन्य अत्याचारों पर पर्दा डालना होगा। भारत ने उग्रवादी इस्लाम के कुरूप चेहरे के रूप में सन् 1920 में केरल के मोपला मुसलमानों द्वारा हजारों हिन्दुओं की वीभत्स तरीकों से हत्यायें की थी–यही गंगा–जमुनी तहजीब थी। विश्व के 57 मुस्लिम बहुसंख्यक देशों में एक भी सेकुलर क्यों नहीं हैं?

आखिर इस बात पर चिन्तन करने की आज आवश्यकता तो है कि वह कौन सी प्रक्रिया थी जिसके कारण अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश भारत से अलग हुये थे? क्या उस प्रक्रिया को उलटने की आवश्यकता इस समय महसूस नहीं की जा रही? भारत को तोड़ने वाली अकल को ठिकाने लगाने की जरूरत है।

इस्लाम 1400 साल पहले अस्तित्व में आया था तो क्या उसके पहले भारत नहीं था? मुहम्मद अली जिन्ना, मुहम्मद इकबाल आदि तीन–चार–पाँच पीढ़ी पहले के इनके हिन्दू पूर्वजों से जोड़ने का काम किया जाना शेष है। उमर अब्दुल्ला को उनके हिन्दू पूर्वजों (कॉल पूर्वजों) से जोड़ना है, हर जैकसन को वापिस जयकिसन में बदलना है। 'हुआ–हुआ' की शियार ध्वनि तो चलती रहती है, उसकी क्या चिन्ता करना।

स्वयं इस्लामी विवरणों में यह बात मोटे–मोटे अक्षरों में लिखी है कि कहीं भी लोगों ने स्वेच्छा से इस्लाम नहीं कबूला। 'समूह के समूह' इस्लाम या मौत' के घोषित विकल्प के कारण ही मुसलमान बने, सऊदी अरब और इंडोनेशिया दोनों मुस्लिम देश हैं, लेकिन दोनों में समानता नहीं है। सऊदी अरब में इस्लाम से पूर्व की सभी बातें खत्म कर दी गयीं हैं, जबकि इंडोनेशिया अभी भी अपने पूर्वजों की संस्कृति को संजोकर रखे हुये है। वहां रामलीला होती है, एयरलाइंस का नाम 'गरूड़' और मुद्रा–नोटों पर 'गणेश जी' का चित्र विद्यमान है।

इतिहास से शिक्षा लेनी चाहिये। 73 साल पहले देश एक दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन झेल चुका है। जब मुसलमान देश के पूर्वी–पश्चिमी हिस्सों में बहुसंख्यक हो गये तो वे हिस्से देश से अलग हो गये। वे इस्लामी राष्ट्र बने। अब भी इस्लामी आबादी बढ़ रही है–यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या फिर वही इतिहास अपने को दोहरायेगा? बंगलादेश से सटे उत्तरपूर्वी राज्यों में बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ से भी मुसलमानों की आबादी बढ़ने का प्रमुख कारण माना जा रहा है। मुस्लिम आबादी तेजी से बढ़ने के कई कारणों में से सबसे बड़ी वजह यह है कि मुस्लिम आबादी की प्रजनन दर गैर–मुस्लिमों की तुलना में ज्यादा है कभी इस्लाम का विस्तार तलवार के बूते किया गया था, अब जनसंख्या बढ़ोत्तरी के जरिये किया जा रहा है।

सन् 1947 में दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन के परिणाम रहे पाकिस्तान और बांग्लादेश। लेकिन सन् 1947 के पहले भी काफी कुछ खोया है। अफगानिस्तान हजार साल पहले तक हिन्दू देश था, उसका नाम था 'उपगणस्थान'। अंग्रेजों ने सन् 1902 में लंका को भारत से अलग किया सन् 1937 में वर्मा को पृथक कर डाला। विभाजन का उत्तर है–अखण्ड भारत।'

इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि देश का विभाजन झूठ, नफरत और शैतानियत के आधार पर किया गया था, मजहब, जाति व भाषा के आधार पर एक देश का निर्माण करना था। भारत ने सभी प्रकार के सदमे सहते हुये विकास और सद्भावना के आधार पर कदम बढ़ाये और आज विश्वमंच पर अग्रणी बन सका। लेकिन मजहब के नाम पर लड़ने वाले पाकिस्तान और बांग्लादेश की गिनती कहां पर है? वे आज भी गरीबी और पिछड़ेपन से जूझ रहे हैं।

दंतोपंत ठेंगड़ी जन्म शताब्दी वर्ष

स्वयंसेवक होना सबसे बड़े सम्मान की बात है

राज्यसभा के सदस्य या 'भारतीय मजदूर संघ' के प्रमुख रहते हुए भी मा. ठेंगड़ी जी सदा–सर्वदा एक साधारण स्वयंसेवक की तरह रहे जैसे कोई अन्य साधारण स्वयंसेवक होता है। वे कहा करते थे कि कोई व्यक्ति किसी भी ऊँचे पद पर आसीन हो या उसका कोई भी स्टेटस हो, पर स्वयंसेवक होना सबसे बड़े सम्मान की बात है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि ा सभा आदि में पे बहुत सहज होते थे। ठेंगड़ी जी सदा अगली पंक्तियों में अन्य प्रतिनिधियों के साथ जमीन पर बैठते थे। वे हमेशा समय पर अपना स्थान ग्रहण कर लेते थे।

एक बार मुझे एक आश्चर्यजनक अनुभव हुआ। 'भारतीय मजदूर संघ' का अखिल भारतीय अधिवेशन था, इसमें मजदूर संघ के हजारों कार्यकर्ता सारे देश से आए हुए थे। पता नहीं क्यों, ठेंगड़ी जी ने मुझे उस अधिवेशन के सार्वजनिक सत्र की अध्यक्षता के लिए बुला लिया। मेरे लिए एक और कष्टकर बात यह थी कि यह अधिवेशन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्यालय नागपुर में था। इस सत्र के लिए बड़ी संख्या में विशिष्ट लोगों को भी बुलाया गया था। यह एक बड़ी संख्या का विशाल कार्यक्रम था। सत्र के बाद सभी का भोजन था। लोग पंक्तियों में बैठ गये थे, पंडाल भर चुका था। सदा की भांति आमंत्रित विशिष्ट अतिथियों के लिए अलग पंक्ति में बैठने का स्थान रखा गया था।

जब सभी लोग बैठ गए तो मेरी आंखें ठेंगड़ी जी को खोज रहीं थीं, पर वे कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे थे। मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि ठेंगड़ी जी सामान्य प्रतिनिधियों के बीच दूर कहीं बैठे हुए थे। वे मजदूर संघ के एक कार्यकर्ता के साथ किसी महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा कर रहे थे। ठेंगड़ी जी मजदूर यूनियन के एक सामान्य से कार्यकर्ता लग रहे थे। मैं प्रतिष्ठित अतिथियों के बीच में बैठा हुआ संकोच से गड़ा जा रहा था। वे हमेशा अपने को एक सामान्य कार्यकर्ता मानते थे और इसलिए वे दूसरों की नब्ज खूब अच्छी तरह पहचानते थे। धरातल पर ठेंगड़ी जी जैसे महान नेता और सामान्य कार्यकर्ता के बीच कोई दूरी नही थी।

प्रत्येक कार्यकर्ता से जीवन्त सम्पर्क के कारण ही ठेंगड़ी जी मजदूर संघ को एक वटवृक्ष के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत कर सके। यह केवल इसीलिए सम्भव हो सका क्योंकि ठेंगड़ी जी ने सदा–सर्वदा यह स्मरण रखा कि वे प्रथमतः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक सामान्य स्वयंसेवक हैं, भले ही राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें कितना ही सम्मानजनक स्थान क्यों न प्राप्त हो गया हो।

–पी.परमेश्वरन्,
वरिष्ठ प्रचारक

सूचना

कृपया आप अपना सुझाव महाकोशल संदेश के ई–मेल व्हाट्सअप नं. 9713223539 पर भेजें।

– सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com